अध्यापक शिक्षक की डायरी-II

तितली कहे मैं तो चली रे आकाश

(यौन उत्पीड़न से आजादी के सपने तक की यात्रा)

रविकांत

आम तौर पर बच्चों के साथ सवेरे की सभा में बाल गीत व बाल कविताएं करना किसी भी विद्यालय में दिन की शुरुआत करने के लिए एक उपयुक्त कदम माना जाता रहा है। सवेरे की सभा मिल कर किसी काम की शुरुआत की वजह से एक किस्म की सामूहिकता का बोध पैदा करती है। सभा में क्या करवाया जाए और क्या नहीं इस पर जरूर मतभेद हो सकते हैं लेकिन सभा करवाने को लेकर एक आम सहमति-सी नजर आती है। इसीलिए विद्यालयों में सुधारों के लिए काम करने वाली कई संस्थाएं सबसे जल्दी किए जा सकने व नजर आने वाले सुधार के लिए सभा को चुनती हैं और कई जिंदगी भर इनसे आगे ही नहीं बढ़ पातीं। यानी जल्दी किए जा सकने व नजर आ सकने वाले सुधारों को करने में ही लगी रहती हैं। कुछ संस्थाएं सवेरे की सभा में बच्चों के शरीर को सक्रिय करने वाली कविताएं या गतिविधियां काफी तादाद में रखती हैं जिन्हें संस्था कर्मियों के लिए सीखना और करना दोनों ही आसान होता है लेकिन दिमाग को सक्रिय, जागरूक व विचारशील बनाने वाली कविताओं व गीतों तथा गतिविधियों को चुनना व करना दोनों ही मुश्किल काम होते हैं।

ऐसे ही एक संस्थाकर्मी ने सवेरे की सभा में एक कविता में बच्चों को 'गाड़ी आई' कविता में गाड़ी की तरह दौड़ा दिया। फिर 'बोल भाई कितने आप कहो जितने' वाला खेल खिलाकर उनके अलग-अलग समूह बनवा दिए। इसके बाद बच्चों ने कुछ और करने को कहा तो उन्हें लगा कि गाड़ी तो आ गई अब बस भी आ जानी चाहिए। सो उन्होंने उस इलाके के बच्चों व विद्यालयों में मशहूर 'तितली उड़ी' नामक कविता करवा दी। उस इलाके में बहुत-सी जगहों पर जब आप बच्चों से कोई कविता सुनाने को कहें तो वे पूरे उत्साह से इस कविता को सुना देते हैं और इसके अंत में अनिवार्य तौर पर बच्चे व अध्यापक प्रसन्न मुद्रा में तालियों की बौछार भी कर देते हैं। कविता कुछ इस तरह थी-

तितली उड़ी
बस में चढ़ी
सीट ना मिली
रोने लगी
ड्राइवर ने कहा
आजा मेरे पास
तितली कहे
चल हट बदमाश।

सभी ने कविता बड़े मजे से की। बाद में शाम के वक्त जब दिन भर के काम पर बात करने बैठे तो यह सवाल समूह में रखा गया कि क्या यह कविता आपको ठीक लगती है। सवाल के भाव व लहजे से ही कइयों

को खटका हो गया कि हो न हो इसमें कुछ गड़बड़ जरूर है, सो कविता करवाने वाले ने ही सबसे पहले कह दिया कि, यह ठीक तो नहीं लगती। अब यह पूछना तो बेकार ही था कि जब ठीक नहीं लगती तो करवाई क्यों। वैसे उनके चेहरे से लगता था कि उन्हें इस कविता में मौजूद गड़बड़ का अहसास था लेकिन उस अहसास को शब्दों में ढाल पाना उनके लिए मुमकिन नहीं हो पा रहा था। फिर सवाल यह रखा गया कि इसमें ऐसी क्या चीज है जो खटकती है। चारों ओर कुछ पलों तक चुप्पी छाई रही। साफ था कि सभी के लिए उपयुक्त सवाल न बन पाने की वजह से जवाब तलाशना मुश्किल हो रहा था। इस पर समूह में दो सवाल रखे गए। पहला, यह तितली कौन है। दूसरा, वह ड्राइवर को चल हट बदमाश क्यों कह रही है।

पहले सवाल का जवाब तो आसानी से आ गया कि इस कविता में तितली लड़की के लिए आया है। दूसरे के जवाब में यह बात आई कि वह वहां पर नहीं बैठना चाहती होगी। तो यह पूछा गया कि वह ड्राइवर के पास क्यों नहीं बैठना चाहती होगी। वैसे भी ड्राइवर के पास कोई नियमित सीट तो होती नहीं और अक्सर ड्राइवर अपने पास हुड पर सवारियों को बैठने से मना ही करते हैं तो यह ड्राइवर इस लड़की पर यह अहसान क्यों करना चाहता है। इस पर एक अध्यापिका ने कहा कि यह छेड़छाड़ का मामला हो सकता है। हो सकता है वह ड्राइवर उससे कुछ बेजा फायदा उठाना चाहता हो। यानि यह कानूनी मामला बन जाता है।

फिर यह सवाल भी पूछा गया कि इस कविता में औरत की छवि कैसी है। इस पर किसी ने कहा कि वह शरीर से बहुत ही कमजोर है, जैसा कि आम तौर पर औरत के बारे में माना जाता है कि वह मर्द से कमजोर होती है। थोड़ी सी भी तकलीफ सहन नहीं कर सकती, इसलिए इतनी सी बात पर रोने लगती है कि उसे बस में बैठने की सीट नहीं मिली। यानी यह कविता औरत के शारीरिक तौर पर कमजोर होने की रूढ़िवादी धारणा को और मजबूत करती है। फिर इस कविता में लड़की की कमजोरी का फायदा उठा कर ड्राइवर, जो कि मर्द भी है, उसे ऐसा प्रस्ताव देता है, जो कि उसे सिर्फ औरत होने की वजह से मिला है। वह अगर किसी मर्द को यह प्रस्ताव देता तो वह मना तो कर सकता था लेकिन उसे हट बदमाश नहीं कहता। लड़की भी इस प्रस्ताव में छुपी गलाजत को समझती है इसलिए वह उसे फटकार देती है। यह पूरी कविता मौजूदा हालात को कबूल कर किसी न किसी तरह उसमें अपनी जगह बना लेने का अर्थ संप्रेषित करती है।

बाद में मुझे इसी शीर्षक की एक कविता याद आई जो मैंने बचपन में शायद कभी विद्यालय में सुनी हो जो इस तरह से थी -

तितली उड़ी
उड़ के चली
फूल ने कहा
आजा मेरे पास
तितली कहे
मैं तो चली रे आकाश

इस कविता के याद आते ही विद्यालयों में होने वाली 'हट बदमाश' वाली कविता का अर्थ ज्यादा साफ हो कर नजर आने लगा। कहां तो पहली कविता हट बदमाश के जरिए औरत की निरीहता को जाहिर कर रही थी और कहां यह कविता आकाश के विस्तार में विचरने की आजादी का सपना दिखा रही थी। यह समझ नहीं आया कि आजादी का सपना दिखाने वाली कविता कैसे यौन उत्पीड़न की हकीकत को कबूल करने वाली कविता में तब्दील हो गई।

अध्यापिकाओं के एक दूसरे समूह में मैंने पिछले विद्यालय का अनुभव बताया, इस कविता को भी बता कर पूछा कि बताइए इस कविता में तितली कौन है और अंत में वह जो कह रही है उससे क्या समझ में आता है। एक अध्यापिका ने बताया कि इसमें बात तो तितली व फूल की है लेकिन यहां भी तितली का मतलब लड़की से ही है और वह फूल के बुलावे को ठुकरा कर आकाश की अनंत ऊंचाइयों व विस्तार में उड़ने की आजादी की बात कर रही है। वह

बंधनों में ना बंध कर मुक्त जीवन की कामना कर रही है। उसने बहुत ही सहज भाव से कहा कि यह तो औरत की आजादी की कविता है।

दोनों ही समूहों में हमने यह बात की कि अध्यापक होने के नाते हम विद्यालयों में करवाने के लिए कविताएं चुनते हैं। और हर कविता विद्यालय में करवाए जाने काबिल नहीं होती। अगर किसी कविता में कोई बात खटकती है लेकिन उसकी वजह पता नहीं चलती तो उस पर अलग-अलग व्यक्तियों के साथ मिल कर विचार करने की जरूरत होती है ताकि उसमें छुपी समस्याओं को पहचाना जा सके।

हमें लगा कि हकीकत में तो इस कविता ने आजादी के सपने से यौन उत्पीड़न तक की यात्रा कर ली है। लेकिन बातचीत के जरिए इसे समझ कर हम यौन उत्पीड़न की हकीकत से आजादी के सपने तक की यात्रा की शुरुआत कर सकते हैं। सही दिशा में कदम उठाने से पहले या उठाने के साथ-साथ सही दिशा को समझना भी तो जरूरी होता है।

हीरे कैसे निकलेंगे?

कक्षा 9 की लड़कियों को पंचतंत्र में से चोर का बलिदान नामक कहानी सुनाई थी। इसके बाद उस कहानी की घटनाओं के बारे में उनसे बात की थी। बातचीत में उन्होंने कहानी की घटनाओं को पहचान कर अपने शब्दों में व्यक्त कर दिया। उस कहानी में तीन दोस्त चोरी से बचने के लिए एक-एक हीरा निगल जाते हैं। एक चोर चोरी के इरादे से दोस्त बन कर उनके साथ लग लेता है। रास्ते में एक गांव का मुखिया उन चारों को पकड़ लेता है। मुखिया का तोता उसे बताता है कि इनके पास तो हीरे हैं। तलाशी में हीरे न मिलने पर वह उन चारों के पेट चीर कर हीरे निकालने का निर्णय लेता है। चोर मुखिया से कहता है कि सबसे पहले वह उसका पेट चीर कर हीरा निकाल ले। जब चोर के पेट को चीर कर कुछ नहीं मिलता तो मुखिया को अफसोस होता है कि उसने तोते की झूठी बात पर यकीन किया। मुखिया यह मान कर तीनों दोस्तों को छोड़ देता है कि उनके पास हीरा नहीं है। हीरों को हथियाने के लिए तीनों दोस्तों के साथ लगा चोर उनकी जान बचाने के लिए अपनी जान कुर्बान कर देता है।

जब कहानी की घटनाओं पर पूरी बातचीत हो गई तो धीमी सी आवाज में एक लड़की ने पूछा कि तीनों बच तो गए लेकिन उन्होंने पेट से हीरे निकाले कैसे होंगे। पूरी कक्षा उसकी ओर ऐसे देखने लगी कि ये कैसा सवाल है। इसे तो उठने से पहले ही खारिज कर देना चाहिए। जाहिर है इस तरह का सवाल कक्षा ने कहानी पर पहली बार सुना था। अब तक तो कहानी खत्म, उपदेश सुने और खेल हजम वाला मामला हुआ करता था। कहानी के आखिर में अध्यापिका बता देती थी कि इस कहानी से क्या सीख मिलती है और बच्चे उसे रट लिया करते थे। संभवतः उन बच्चों के सामने यह पहली बार था कि कहानी के खत्म हो जाने पर भी उन्हीं में से किसी एक ने उस पर सवाल उठाने की हिमाकत की थी।

धीमे सुर में उठते सवाल को पकड़ कर मैंने उसे पूरी कक्षा के सामने रखा और सबसे पूछा कि कोई बताए कि तीनों दोस्तों ने पेट में से हीरे बाहर कैसे निकाले होंगे। कक्षा की ही किसी लड़की द्वारा सवाल पूछने से पैदा हुए सदमे से उबर कर कक्षा ने इस सवाल पर विचार करना शुरू किया। जैसे ही विचारों की रेल पटरी पर दौड़ी कि एक लड़की बोली, उल्टी करके, हीरे को उल्टी करके निकाल लेंगे। यह जवाब सबको ठीक लगा व सबको बड़ा मजा भी आया, कुछ के दिमाग में उल्टी का अनुभव भी ताजा हो गया था, ऐसा उनके चेहरों से जाहिर था। मैंने इस जवाब पर बात को आगे यह कह कर बढ़ाया कि यह मुमकिन तो है लेकिन यह तब हो सकता है जब हीरे खाने के कुछ ही देर बाद उल्टी कर ली जाए। लेकिन कहानी में तो उन तीनों दोस्तों की योजना घर जाकर हीरों को वापिस निकालने की थी। और फिर जब उन्हें मुखिया ने पकड़ा तब भी तो उन्हें हीरों को खाए हुए बहुत देर हो चुकी थी। क्या तब तक हीरे पेट में ही रहेंगे और उल्टी तो उसी चीज की हो सकती है न, जो पेट में हो।

बच्चों को लगा कि यह बात तो ठीक है यानी फिर से सवाल अनसुलझा हो गया। सभी उलझन में पड़ गए। बात को आगे बढ़ाने के लिए मैंने पूछा पेट में जाने के बाद हीरा कहां जाएगा। कुछ लड़कियां शायद कुछ समझीं लेकिन

सोचने व बोलने में हिचक रही थीं। उनकी मदद करने के लिए मैंने खाने का उदाहरण लिया कि हम खाना मुंह से खाते हैं फिर वह खाने की नली में होकर पेट में जाता है उसके बाद वह कहां जाता होगा। इस उदाहरण पर बात करते-करते ही कुछ लड़कियां समझ चुकी थीं कि अब हीरा निकलने की एक ही संभावना बची है। आखिरकार एक लड़की ने बोल ही दिया कि अब तो हीरा नीचे से ही निकलेगा। इस घटना की कल्पना से ही कुछ के चेहरों पर दबी-दबी मुस्कान फूट पड़ी और कई खिलखिला कर हंस पड़ीं। एक ने हिम्मसत करके बोल ही दिया कि हीरे तो लेट्रिंग के साथ निकल जाएंगे। फिर किसी ने पूछ लिया कि उन्हें लेट्रिंग से निकालेंगे कैसे। इस बार भी किसी लड़की ने ही जवाब दिया कि हीरों को लैंट्रिंग से निकाल कर धो देंगे और फिर उन्हें बेच कर मनचाही चीजें खरीद लेंगे। कई लड़कियों को लैट्रिंग से हीरे निकाल कर धोने की बात पर कुछ असहजता सी हो रही थी। कुछ को लेट्रिंग से निकले हीरे थोड़े असहज कर रहे थे लेकिन उन हीरों से खरीदी जा सकने वाली मनचाही चीजों की कल्पना ने कुछ ही पलों में उनकी यह असहजता दूर कर दी।

इस पूरी बातचीत के बाद मैंने कक्षा की सभी लड़कियों का ध्यान इस ओर दिलाया कि अगर यह लड़की इस सवाल को नहीं पूछती तो हम इसका जवाब कैसे खोजते। जवाब खोजने के लिए सही सवाल उठाना पहला व जरूरी कदम है। इस पर कुछ ने सहमति में गरदन हिलाई तो कुछ चुप रहे व दो-तीन ने असहमति जताई। एक लड़की ने असहमति में सिर हिलाते हुए धीमी आवाज में कहा कि मेरे मन में भी यह सवाल उठा था और मैं तो इसका जवाब खोज ही लेती। इस पर एक दूसरी लड़की ने बहुत ही सुंदर बात कही कि तुम तो खोज ही लेती लेकिन अगर यह लड़की सवाल न पूछती तो हम सब मिल कर इसका जवाब कैसे खोज पाते। मिल कर सोचने की जरूरत को कक्षा में कोई बच्ची न सिर्फ पहचान ले बल्कि उसे साफ शब्दों में व्यक्त भी कर दे किसी अध्यापक के लिए कक्षा में इससे बेहतर पल और कौनसा हो सकता है।

सर पर धरवाया हाथ

पिछले आठ दिनों से एक सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय की कक्षा 6, 7 तथा 9 की लड़कियों को पढ़ा रहा था। रोजना कक्षा 6 व 7 को मिला कर तथा कक्षा 9 के दो भागों को बारी-बारी से दो कालांश एक साथ पढ़ा रहा था। बड़े बच्चों को पढ़ाने का यह पहला मौका था सो एक डर तो मन में था ही कि पता नहीं ठीक से पढ़ा पाऊंगा या नहीं। हालांकि प्राथमिक के बच्चों तथा प्रारंभिक तक के अध्यापकों के साथ काम करते-करते इतना भरोसा तो हो ही गया था कि मैं उच्च माध्यमिक के बच्चों को पढ़ा सकता हूं।

वैसे भी पिछले एक-दो बरसों का अनुभव यह था कि सरकारी स्कूलों के उच्च माध्यमिक के ज्यादातर बच्चों का शैक्षिक स्तर बमुश्किल ही कक्षा 3 से 5 तक पहुंच पाता है। कोई-कोई विरला ही होता है जो पढ़ता भी नौ में है और उसका स्तर भी नौ का ही हो।

खैर अपने काम की दैनिक तैयारी तथा काम करते वक्त लगातार यह अंदाजा लगाने की कोशिश कि क्या बच्चे मेरा दिया काम कर पा रहे हैं या नहीं, दोनों ही रंग लाई और मैं लगातार आठों दिन बच्चों के साथ ठीक-ठाक काम कर पाया। हां बीच-बीच में बच्चों के स्तर की वजह से मुझे अपनी योजनाओं में बदलाव जरूर करने पड़े। आखिरी दिन जब सभी कक्षाओं के साथ काम पूरा हो गया और आखिरी कक्षा में सभी लड़कियां अपना काम पूरा करके जाने की हड़बड़ी में थी तभी एक लड़की ने मेरे करीब आ कर पूरे विश्वास व हक के साथ मेरा हाथ पकड़ा और अपने सिर पर धर लिया। मैं इस अप्रत्याशित हरकत पर अचकचा सा गया। बरसों से ना तो किसी से आशीर्वाद लिया था और ना ही किसी को दिया था। वह भी कुछ पलों तक मेरा हाथ अपने सिर पर थामे रही। फिर अपनी अचकचाहट पर काबू पाकर मैंने उसके सिर से अपना हाथ हटाते हुए उससे पूछा, यह क्या कर रही हो। अब वह भी जाने की हड़बड़ी में आ चुकी थी। वह बोली आपका आशीर्वाद ले रही हूं। ''क्यों भला?'' मैंने हंसते हुए पूछा। वह बोली, ताकि आपकी ताकत मुझमें आ जाए और मैं परीक्षा में अच्छा कर सकूं। परीक्षाएं बस दो-चार दिन ही दूर थीं।

मैं हैरान हो गया। सिर्फ 8 दिन तक रोज दो कालांश में भाषा व गणित पढ़ कर उसे यह यकीन कैसे हो गया कि मुझमें कोई ताकत है जो परीक्षा में उसका बेड़ा पार कर देगी। कैसे बना होगा, उसका मुझ पर यह भरोसा। क्या इस वजह से कि पिछले आठ दिनों में मैंने ना तो किसी को डांटा और ना ही किसी पर चीखा चिल्लाया, ना ही मैंने किसी पर ताने कसे या धिक्कारा, जो कि उसके सरकारी विद्यालय में इतनी ही आम बात थी जितनी कि हवा और पानी। या इसलिए कि उसे और उसकी सहेलियों को मेरी कक्षा में हंसने-बोलने व अपने मन की बात कहने की आजादी थी, जबकि बाकी कक्षाओं में मन की बात करना अपराध से कम नहीं माना जाता था। या फिर इसलिए कि मैंने उन सभी के साथ उनके स्तर से काम शुरू किया और लगातार उससे जोड़ते हुए इस तरह से सिखाने की कोशिश की थी कि वे खुद बहुत से काम अपने आप कर पाएं। ना कि उन्हें लगातार धिक्कारते हुए पढ़ाया कि यह सब तो तुम्हें पिछली कक्षाओं में सीख कर आना चाहिए था। जब भी उन्हें कोई चीज समझ नहीं आई तो उसे एक से ज्यादा बार अलग-अलग तरीकों से समझाने की कोशिश की। या इसलिए कि मैं भी उनके साथ रोज नीचे फर्श पर ही बैठता था, उनके साथ कविताएं करता था न कि बाकी अध्यापिकाओं की तरह हाथ बांध कर व ऐसा मुंह बना कर खड़ा रहता था, कि वे कोई बात पूछने या बोलने से पहले चार बार सोचें। मैं नहीं जानता कि उसके मन में बने भरोसे की वजहें क्या थीं लेकिन उसके मन में भरोसा बना यह तो शीशे की तरह साफ था।

शाम को जब घर लौट कर उसके द्वारा किए गए कामों को उल्टा-पुल्टा तो पाया कि उसकी लिखित अभिव्यक्ति बेहद कमजोर है। कहानी का लिखित नक्शा वह नहीं बना पाई थी। उसने पिछले आठ बरसों में मिले नकल करने के प्रशिक्षण का इस्तेमाल करके कहानी के नक्शे का ढांचा बोर्ड से अपनी कापी में उतार लिया था। अपने मन से वर्णन का काम करते वक्त भी उसने हर विषय पर दो-तीन पंक्तियां बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी थीं। हां उसने बड़े उत्साह के साथ अपनी सहेली का वर्णन किया था। बेशक वह दो-तीन पंक्तियों का वर्णन जानदार था। वर्णन सुन कर आपके दिमाग में उसकी सहेली की एक तस्वीर उभर आती थी। मेरा मन एक अनकहे डर से भर गया। अगर वह बड़ों व शिक्षातंत्र की सनक की वजह से पैदा हुए परीक्षा नामक विकराल प्रेतबाधा को नहीं लांघ पाई तो उसका भोला विश्वास कितना बचा रह पाएगा। वह नहीं समझ पाएगी कि यह परीक्षा नामक विकराल प्रेत शिक्षातंत्र व समाज की सामाजिक-राजनैतिक नाकामी से पैदा हुआ है जो अपने नाकारापन को छिपाने के लिए मासूम बच्चों को उसका शिकार बना देते हैं। ◆

लेखक परिचयः करीब 21 वर्षों से प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक शिक्षा, शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षाक्रम और अनुवाद के क्षेत्र में कार्य। हाल-फिलहाल विभिन्न संस्थाओं के साथ बतौर शैक्षिक सलाहकार कार्यरत हैं।

संपर्क : 9414057424; ravikaant@gmail.com